Que. 1. Social life of Champa.

Ans →

दक्षिण पूर्व एशिया के विभिन्न देशों में चम्पा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान समय में जिस प्रदेश को दक्षिणी वियतनाम का राज्य कहा जाता है, प्रायः वे ही प्राचीन काल में चम्पा के भारतीय राज्य के अन्तर्गत थे। इस क्षेत्र में संस्कृत के बहुत से अभिलेख उपलब्ध हुए हैं। जिनके अनुशीलन से चम्पा की सामाजिक व्यवस्था का चित्र हमारे सामने उपलब्ध उपस्थित होता है तथा इस पर भारत का प्रभाव स्पष्ट रूप से विद्यमान है। चम्पा की सामाजिक व्यवस्था का विवरण निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जाता है :—

चम्पा का सामाजिक जीवन वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित था। भारत से जो उपनिवेशक वहाँ बसने के लिए गये थे, वर्णों और आश्रमों की परम्परा वे अपने साथ चम्पा ले गये थे। इन उपनिवेशकों में प्रधानतया ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्णों के लोग थे, यद्यपि बहुत से वैश्य वर्ण के व्यक्ति भी व्यापार आदि के लिए वहाँ बस गये थे। शूद्र लोग भी भारत से चम्पा जाकर बसे हों, यह कह सकना कठिन है। पर चम्पा के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि वहाँ के जन समाज में दासों और दासियों की अच्छी बड़ी संख्या थी और राजा तथा अन्य सम्पन्न लोग मन्दिरों के लिए जब धन-सम्पत्ति प्रदान करते थे तो साथ में बहुत से दासों - दासियों को भी दान में दे दिया करते थे। ये दास शूद्र स्थानीय थे और ये भारत के उपनिवेशकों में से न होकर चम्पा के मूलनिवासियों में से थे। यह कल्पना असंगत नहीं होगी। युद्ध में परास्त हुए देश के नर-नारियों को बन्दी बनाकर ले जाने और उन्हें दास बना लेने की प्रथा भी दक्षिण पूर्व एशिया के विविध राज्यों में विद्यमान थी। अतः उच्च वर्ग के लोगों को भी दास्य जीवन व्यतीत करने के लिए विवश होना पड़ता होगा। दासों को राजा ...

बहुत से संकेत चम्पा के अभिलेखों में विद्यमान हैं। [illegible] के बो नंग अभिलेख में ब्राह्मण और बौद्ध धर्मावित राजा जयइन्द्र वर्मा द्वारा श्री महालिंग देव के मन्दिर के लिए दास के सहित कृषि योग्य भूमि के दान का उल्लेख है।

यद्यपि चम्पा और भारत के समाज में पर्याप्त अन्तर था। पर वहाँ के भारतीय धर्म संस्कृति को अपनाये हुए राजा वर्णाश्रम व्यवस्था की स्थापना के आदर्श को सदा अपने सम्मुख रखते थे। 766 ई० के राजा इन्द्रवर्मा प्रथम के अभिलेख में उसकी राजधानी के सम्बन्ध में यह लिखा गया है कि उसकी अपनी शक्ति के प्रभाव के कारण वह पूर्णतया निरुपद्रव थी। वहाँ वर्ण तथा आश्रम भली भाँति सुव्यवस्थित थे, और वह सुरनगरी के समान थी। कौटिल्य अर्थशास्त्र में राजा का यह प्रधान कर्तव्य प्रतिपादित किया गया है कि वह प्रजा को वर्णाश्रम धर्म में स्थित रखे।

चम्पा के समाज में ब्राह्मणों और क्षत्रियों का प्रमुख स्थान था। ब्राह्मण की हत्या को घोर पाप माना जाता था। 657 ई० के माईसोन अभिलेख में राजा द्वारा प्रतिष्ठापित भगवान ईशानेश्वर, श्री शम्भुभद्रेश्वर और श्री प्रभासेश्वर की मूर्तियों की निरन्तर पूजा की व्यवस्था के उल्लेख के पश्चात् यह कहा गया है कि, जो कोई इन्हें किसी भी प्रकार से क्षति पहुँचायेगा उसे ब्राह्मण की हत्या का पाप लगेगा और जो कोई इनकी भलिभाँति रक्षा करेगा उसे अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होगा। ब्राह्मण हत्या से बढ़कर कोई पाप नहीं है और अश्वमेध से बढ़कर कोई ~~पाप नहीं है~~ पुण्य नहीं है। इससे स्पष्ट है कि ब्राह्मणों को समाज में अत्यन्त आदर की दृष्टि से देखा जाता था। और उन्हें किसी प्रकार से क्षति पहुँचाना अक्षम्य अपराध था पर राज सत्ता के उस युग में जबकि राजा को 'ब्रह्मांश प्रभव' माना जाता हो, यदि ब्राह्मण की तुलना में राजा को [illegible] समझा जाय, तो यह अस्वाभाविक नहीं है।

फिर एक अभिलेख में अन्य राजाओं और क्षत्रियों के साथ साथ ब्राह्मणों और पुरोहितों द्वारा भी राजा के चरणों को स्पर्श करने का उल्लेख है। पर इससे यह नहीं समझना चाहिए कि समाज में ब्राह्मणों की तुलना में क्षत्रियों का स्थान अधिक ऊँचा था। वस्तुतः यह दोनों ही वर्ण समाज में उच्च स्थान रखते थे और चम्पा का समाज 'ब्रह्म क्षत्र प्रधान' था।

चम्पा में ब्राह्मणों और क्षत्रियों में विवाह सम्बन्ध प्रचलित था। 657 ई० के माईसोन के अभिलेखों में चम्पा के राजाओं की जो वंशावली दी गयी है, उसके अनुसार राजा रुद्रवर्मा का पिता एक श्रेष्ठ ब्राह्मण था और उसकी माता (क्षत्रीय) मनोरथवर्मा (दौहित्री) थी।

कार्य के अनुसार ब्राह्मण वर्ग के व्यक्ति भी पुरोहित, अग्रज, पंडित और तापस इत्यादि वर्गों के होते थे। 801 ई० में उत्कीर्ण ग्लेलमोव अभिलेख में पुरोहित आदि के गुणों का उल्लेख है। जिससे यह संकेत मिलता है कि पुरोहितों, अग्रासों, पण्डितों और तापसों के गणों या संगठनों की भी चम्पा में सत्ता थी, जिन्हें महापुरोहित द्वारा सम्बोधित किया जाता था।

राजवंशों में उत्तराधिकार केवल पिता-पुत्र के क्रमानुसार नहीं चलता था, अपितु अनेक बार राजा का भानजा उसका उत्तराधिकारी होता था। ऐसे अनेक उदाहरण अभिलेखों से ज्ञात होते हैं।

रहन-सहन तथा वेशभूषा :-

ब्राह्मण और क्षत्रियों द्वारा चम्पा के निवासियों के सम्भ्रान्त व उच्चवर्ग का निर्माण होता था। एक अभिलेख से इस वर्ग के व्यक्तियों की वेशभूषा तथा रहन/सहन पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। राजा भद्रवर्मा का एक उच्च पदाधिकारी आरा ~~महासामन्त~~ महासामन्त था। वह शीर्ष पर माला धारण करता था, मस्तक पर [illegible] तिलक लगाता था। उनके कान पूरे-पूरे आभूषणों से ढके रहते थे उसकी कमर में सोने की करधनी [illegible] थी और [illegible] पैरों [illegible]

और उसके शरीर पर दो वस्त्र होते थे, वह ऐसी पालकी में बैठकर चलता था, जिसके डंडे चाँदी के बने होते थे। जब वह कहीं आता जाता था तो सैनिक तथा बाजा बजाने वाले उसके साथ-साथ चला करते थे। अभिलेख के इस विवरण चम्पा के सम्भ्रांत राजपदाधिकारियों की वेशभूषा तथा रहन सहन का स्पष्ट चित्र हमारे सम्मुख उपस्थित हो जाता है।

ग्यारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में एक चीनी राजदूत चंपा आया था। उसने राजा हरिवर्मा के विषय में लिखा है कि राजा सोने के तारों से कढ़े हुए रेशमी वस्त्र पहनता है और उनपर लम्बा चोगा डाल देता है जो सात सोने की लड़ियों से बंधा रहता है। सिर पर वह सुनहरा मुकुट पहनता है, जिसमें सात प्रकार के बहुमूल्य रत्न जड़े होते हैं जब वह बाहर निकलता है तो उसके पीछे दस स्त्रियाँ और पचास पुरुष चलते हैं जिनके हाथों में पान-सुपारी से भरी सोने की थालियाँ रहती हैं। चीनी राजदूत द्वारा राजा की वेशभूषा का जो वर्णन किया गया है उसकी पुष्टि अभिलेखों द्वारा भी होती है। पो नगर के एक अभिलेख में राजा विक्रान्त वर्मा को सिर पर मुकुट पहने हुए कमर में कटी सूत्र धारण किये हुए कानों में कुंडल तथा गले में हार पहने हुए वर्णित किया गया है। केवल राजा ही नहीं, अपितु सम्भ्रान्त वर्ग के लोग भी सिर पर मुकुट पहना करते थे। शरीर पर सुगन्ध, चन्दन, आदि लगाने की प्रथा भी चम्पा में विद्यमान थी।

चम्पा के मन्दिरों में जो विविध चित्रावलियाँ उत्कीर्ण हैं उनसे भी वहाँ के लोगों की वेश-भूषा पर प्रकाश पड़ता है। इनमें स्त्रियों और पुरुषों दोनों के शरीरों के कटि से ऊपर के भाग को नंगा दिखाया गया है। चित्रों में स्त्रियां ने लहँगे के ढंग का एक वस्त्र पहना हुआ है जो नीचे पैरों तक जाता है। पुरुषों का अधोवस्त्र घुटने तक जाता है। स्त्री-पुरुष दोनों के अधोवस्त्र पेटी द्वारा कमर पर बँधे हुए रहते हैं। सम्पन्न नर-नारियों की पेटियां विविध प्रकार के रत्नों से अलंकृत

पुरुष जो अधोवस्त्र पहनते थे, वह धोती के ढंग का होता था। चम्पा के कुछ चित्रों में पुरुषों को दुपट्टा ओढ़े हुए भी प्रदर्शित किया गया है पर उत्तरीय का अधिक रिवाज नहीं था। स्त्री और पुरुष दोनों ही कटि से ऊपर का भाग प्रायः नंगा रखते थे, यद्यपि सम्पन्न लोग कण्ठ, छाती तथा कोहनी पर अनेकविध आभूषण धारण किया करते थे। जिनसे शरीर के ये अंग अधिक रूप से ढके रहते थे। चम्पा की चित्रावलियों में तापसी और दासों को केवल लंगोटी पहने हुए दिखाया गया है। लोग प्रायः नंगे पैर रहते थे, यद्यपि सम्पन्न लोग जूतों का भी प्रयोग किया करते थे। मन्दिरों की भित्तियों आदि पर उत्कीर्ण मूर्तियों व चित्रों में पुरुषों और स्त्रियों की केश सज्जा जिस ढंग से प्रदर्शित की गयी है, वह बहुत कलात्मक है। वे बालों को सावधानी से सम्यक संवारकर उन्हें अनेक प्रकार के जूड़ों में बांधा करते थे और उन्हें रत्नों से जड़ित आभूषणों तथा पुष्पमालाओं आदि द्वारा विभूषित भी किया करते थे।

आमोद-प्रमोद

→ चम्पा में लोगों के आमोद-प्रमोद के मुख्य साधन वाद्यवादन, संगीत तथा नृत्य थे। चम्पा के मन्दिरों की भित्तियों आदि पर जो बहुत सी चित्रावलियाँ उत्कीर्ण हैं, उनमें अनेक गायक, वादक तथा नर्तक भी अंकित हैं। माइसोन के एक उत्कीर्ण चित्र में बांसुरी बजाने का एक दृश्य दिखाया गया है। एक अन्य चित्र में एक मनुष्य नृत्य की मुद्रा में अंकित है। उसने बायें पैर को ऊपर उठाया हुआ है और जांघ पर बायां हाथ टेक रखा है। चम्पा के भग्नावशेषों में नर्तकी की एक मूर्ति मिली है जो वर्तमान समय में तुरेन के संग्रहालय में विद्यमान है। नर्तकी की यह मूर्ति अत्यन्त सुन्दर एवं कलात्मक है। माइसोन के एक अभिलेख में श्री युवराज महासेनापति द्वारा श्री ईशानभद्रेश्वर के निमित्त प्रदान किए गया। नर्तकी तथा गायकों का उल्लेख विद्यमान है। इसी प्रकार पो नगर के एक अभिलेख के अनुसार सूर्यदेवी ने देवी भगवती को मंदिर को [illegible]

Scanned with CamSc

अर्पित की थी।

शिल्प तथा व्यवसाय:—

चम्पा के आर्थिक जीवन का मुख्य आधार खेती थी। वहाँ मुख्यतः चावल ही पैदावार होती थी, और यहीं लोगों का मुख्य भोजन था। गेहूँ का उल्लेख चम्पा के किसी अभिलेख में नहीं मिलता। सिंचाई के लिए नदियों पर बाँध-बाँध कर नहरें भी निकाली जाती थी। राजा श्री विक्रान्त वर्मा ने सत्यमुख लिंग को दान दिये गये भूखण्ड को सिंचाई के निमित्त नहर का निर्माण कराया। ऐसे ही कतिपय अन्य उदाहरण भी अभिलेखों से दिये जा सकते हैं। खेती के अतिरिक्त अनेक शिल्पों का अनुसरण भी चम्पा में किया जाता था। इनमें तन्तुवाय, स्थापति, सुवर्णकार आदि के शिल्प प्रमुख थे। महीने वस्त्रों पर सोने और चाँदी की जरी का काम किया जाता था, और उनपर रत्न भी जुड़े जाते थे। गहने पहनने का रिवाज चम्पा में बहुत था। मुकुट, कण्ठहार, केयूर, कंकण आदि बहुत प्रकार के आभूषण सुवर्णकारों द्वारा बनाये जाते थे। सुवर्णकार केवल आभूषण ही नहीं बनाते थे, अपितु सोने और चाँदी के वृक्ष, लता, पत्र, पुष्प आदि बनाकर उनसे राजभवन को सुसज्जित भी किया करते थे। ताँबे व पीतल सदृश धातुओं के तो बर्तन बनते ही थे। साथ ही सोने और चाँदी को भी बर्तन बनाने के लिए प्रयुक्त किया जाता था। 1050 ई० के पो नगर के अभिलेख में राजा परमेश्वर वर्मा द्वितीय द्वारा चाँदी के लोटे को पूजा के लिए काम में लाने के प्रयोजन से मंदिर को दान में दिये जाने का उल्लेख है। सोने-चाँदी के बर्तनों पर नक्काशी का काम भी किया जाता था। धूप जलाने तथा पान रखने के प्रयोगों में आने वाले सुवर्ण पात्रों का भी उल्लेख अभिलेखों में है। इसी प्रकार अस्त्र-शस्त्र बनाने, नौकाएं व जहाज बनाने और हाथी दांत का काम करने में भी बहुत से शिल्पी व्याप्त रहा करते थे। भवन निर्माण का शिल्प भी चम्पा में बहुत उन्नत था।

Scanned with CamSc